**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# मौर्य काल में पर्यावरणीय सरंक्षण एवं संवर्धन

**प्रीति कुमारी, आभा भारती,** शोधार्थी, **अशोक कुमार मंडल,** Ph.D., इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
**प्रीति कुमारी, आभा भारती,** शोधार्थी,
**अशोक कुमार मंडल,** Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/08/2023
Revised on : -----
Accepted on : 06/09/2023
Plagiarism : 00% on 29/08/2023

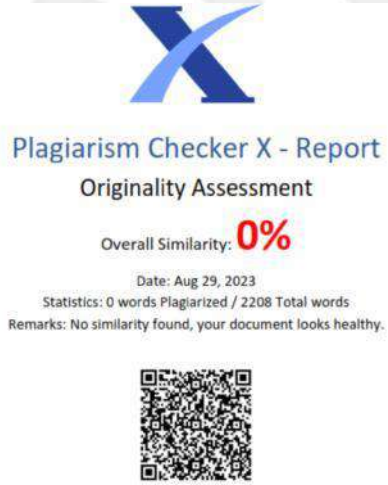


## शोध सार

*पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति परि और आवरण शब्द से मिलकर बना है जो कि फ्रेंच भाषा के शब्द environ से निकला है जिसका अर्थ है चारो ओर घेरा अर्थात् पर्यावरण का निर्माण ऐसे तत्त्व मिलकर करते हैं जो हमारे चारो ओर प्राकृतिक और मानव निर्मित चीज़े है जिनमें हम सभी जीव साथ साथ रहते हैं। डावर्थ के अनुसार पर्यावरण शब्द का अर्थ उन सभी गहरी शक्तियों एवं तत्वों से है जो व्यक्तियों को आजीवन प्रभावित करते हैं। इतिहास गवाह है कि मानव पर पर्यावरण के प्रभावों और उसकी और प्रकृति के बीच की जो क्रियाएं है वह मानव को प्रभावित करते हैं और जिस प्रकार मनुष्य प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करता है और पुनः दोनो मिलकर अपने अपने कार्यों का संपादन करते हैं। इस प्रकार हम यह भी कह सकते हैं कि पर्यावरण का इतिहास के प्रत्येक काल से बहुत गहरा संबंध भी रहा है और मौर्य काल भी इससे अछूता नहीं है।*

## मुख्य शब्द

*पर्यावरण, सरंक्षण, संवर्धन, प्रकृति, आवरण, संपादन.*

## भूमिका

पर्यावरणीय इतिहास का अध्ययन हमारे लिए एक नवीन सोच है। पर्यावरण से हमे उपहार स्वरूप जल, खाद्य पदार्थ और अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है। पर्यावरण का अध्ययन और उससे जुड़े उसके संरक्षण और संवर्धन का अध्ययन हमारे संस्कृति और प्रकृति के बीच की बातचीत का ही अध्ययन है। एक इतिहासकार को यह बात ज्ञात होनी चाहिए कि आखिर ऐसा क्या हुआ था जिससे पर्यावरण से संबंधित कई तथ्यों और सिद्धांतों को प्रारंभ करने की आवश्यकता है तथा कैसे हम पर्यावरण के अध्ययन को और अधिक से अधिक सुचारू रूप से प्रारंभ कर सकें।

पर्यावरण के मुख्य घटकों को हम तीन रूपों में विभाजित कर समझ सकते हैं। सर्वप्रथम मनुष्य स्वयं प्रकृति और समय में हो रहे परिवर्तन में पृथ्वी की भूमि, पानी, वायुमंडल और जीव मंडल का मनुष्य पर क्या शारीरिक प्रभाव शामिल है इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। तत्पश्चात् पर्यावरण के अध्ययन के माध्यम से हम कैसे प्रकृति का उपयोग कर सकते हैं तथा उसके दुष्परिणाम स्वरूप जनसंख्या वृद्धि, तकनीक और उत्पादन की खपत इत्यादि जैसी समस्याएं सम्मिलित है। अंततः पर्यावरण अध्ययन के द्वारा हम लोग अपनी प्रकृति के बारे में कैसे सोते हैं और किस तरह के व्यवहार विश्वास और हमारे मूल्य प्रकृति को प्रभावित करते हैं, विशेष कर धर्म और विज्ञान के रूप में जो किसी न किसी प्रकार हमें इतिहास से जोड़ रखते हैं। इस प्रकार मुख्य रूप से हम निष्कर्ष पर पहुंच पाते हैं कि वायुमंडल, जैव मंडल, स्थल मंडल और जल मंडल हमारे पर्यावरण के चार प्रमुख घटक हैं।

जहां तक भारतीय इतिहास में पर्यावरणीय संरक्षण और संवर्धन का विषय आएगा तो मौर्य काल को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है, क्योंकि मौर्य काल का इतिहास संपूर्ण भारतीय इतिहास का न केवल सबसे समृद्ध कल था, अपितु समाज के प्रत्येक क्षेत्र में या एक प्रकार से कहें तो मौर्य काल में चतुर्मुखी विकास हुआ। अतः स्वाभाविक है कि मौर्य काल में पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया जिससे सभी मानव एवं सभी जीवों का कल्याण हो सके।

## शोध प्रविधि

इस शोध आलेख में विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही शोध आलेखों, पुस्तकों एवं इंटरनेंट का कुशलता से प्रयोग किया गया है। वस्तुतः यह शोध आलेख द्वितीयक स्त्रोतो पर आधारित हैं।

## विषय वस्तु

मौर्य काल में पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के कई पहलुओं पर विशेष बल दिया गया है। मौर्य काल के प्रत्येक शासको ने युद्ध के साथ–साथ पर्यावरण और प्रकृति से संबंधित विषयों पर ध्यान दिया। हमारे वेदों में भी यह उल्लेखित है कि एक वृक्ष 100 पुत्रों से श्रेष्ठ हैं।[1] अथर्ववेद में भी पर्यावरण की महत्व बताते हुए बताया गया है कि हमें अपनी प्राकृतिक संपदा पहाड़, मिट्टी, पानी का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए जिससे हमारी धरती को बहुत कम नुकसान हों। यहां तक की चाणक्य ने भी पर्यावरण संरक्षण का अधिकार और कर्तव्य राज्य का ही उत्तरदायित्व बताया है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के दायित्वपूर्ण पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति की गई थी जिनका कार्य पेड़–पौधों व जीव–जंतुओं की रक्षा, उनके अवैध शिकार रोकना इत्यादि सम्मिलित था। जैसा कि हम जानते हैं कि मौर्य काल राजतंत्रात्मक प्रणाली पर आधारित था जिसमें प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति एवं पर्यावरण के अध्ययन के साथ–साथ उसके संरक्षण व संवर्धन पर भी बोल दिया गया जिसका प्रमाण कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र से प्राप्त होता है। मौर्य काल में भी जंगलों में रहने वाले पशुओं को मारना निषिद्ध था जिसमें गैंडा, भैंस, मृग, मोर जैसे जीव तथा मछलियां शामिल थे।

भारतीय इतिहास में पर्यावरण का अध्ययन मौर्य काल में सबसे गौरवशाली अध्याय रहा। हमें 321 ईस्वी पूर्व और 309 ईस्वी पूर्व के बीच की अवधि में लिखे गए कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विस्तार रूप से बौद्ध धर्म कानून की जानकारी प्राप्त होती है जिसमें वन प्रशासन की आवश्यकता महसूस की गई थी और इस प्रक्रिया को कई कानूनी कार्रवाई के साथ प्रारंभ किया गया था। इस कानून में पेड़ों को काटने जंगलों को नुकसान पहुंचाने और पशुओं को मुख्य रूप से हिरन को मारने पर कई प्रकार के दंड निर्धारित किए गए थे। किसी भी प्रकार के छाया या फल या फूल देने वाले पौधों के कोमल अंकुर को काटने पर भी जुर्माना था। जिन पेड़ों की पूजा की जाती थी उनकी कटाई पर दोगुना जुर्माना लगाया जाता था।[2] वन अधीक्षक को वन से प्राप्त उपज के लिए रखा जाता था। कारखाने स्थापित करने पर यह किसी भी उत्पादक वन को हानि पहुंचाने पर भी जुर्माना तय किया गया था। मौर्य शासक अशोक ने अपने शिलालेख में जानवरों को करने के लिए विभिन्न आर्थिक दंड निर्धारित किए थे जिसमें मुख्य रूप से चीटियां, गिलहरी, तोता, लाल सिर वाले बत्तख, कबूतर, छिपकली और चूहा भी शामिल थे।[3] संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत में मौर्य काल में ही पर्यावरण संरक्षण का एक दर्शन था जिसमें यह निश्चित किया गया था की प्रकृति

का किसी प्रकार से दुरुपयोग अन्याय पूर्ण और धार्मिक ही माना जाएगा। शासन पर ही नहीं बल्कि आम आदमी पर भी सभी नियम लागू होते हैं। प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा तथा उसका संरक्षण तथा इसका प्रबंधन मनुष्य के लिए बहुत ही अटूट था और उसे सुरक्षा प्रदान करना शासको का मुख्य कर्तव्य था। विभिन्न बौद्धिक साहित्य एवं धार्मिक साहित्याओं से भी हम प्राचीन काल के पर्यावरणीय स्थिति पर व्यापक प्रकाश पड़ता है जिससे ज्ञात होता है कि हमारे देश में पर्यावरण विषय आरंभ से ही अपने बौद्धिक स्तर पर उच्च वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित स्थिति में रहा है। मौर्यकालीन भारतीय इतिहास पर्यावरण विषय के लिए हमेशा से उर्वरक पृष्ठभूमि उपलब्ध करवाता रहा है। मौर्यकालीन पर्यावरणीय ज्ञान तो इतना अधिक गुणकारी एवं वैज्ञानिक है कि इसको अपना कर हम अपने व्यवहारिक जीवन शैली को वर्तमान समय में अत्यधिक उत्कृष्ट बना सकते हैं। मौर्यकालीन साहित्य वैदिक साहित्य जैन ग्रंथो, वेदंगों, महाकाव्य पुराणों, लोकगीतों आदि में पर्यावरण से संबंधित ज्ञान एवं विज्ञान की अनेकानेक बातें समाहित है।

संपूर्ण विश्व में यदि देखा जाए तो वर्तमान समय में यदि कोई ज्वलंत मुद्दा है तो वह है ग्लोबल वार्मिंग। इसका सीधा संबंध पर्यावरणीय स्थिति से है। बढ़ती जनसंख्या के साथ–साथ मानव गतिविधियों में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण संपूर्ण विश्व में प्राकृतिक संसाधनों की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। विभिन्न पौधों से ज्ञात होता है कि विभिन्न मानव गतिविधियों से उत्पन्न प्रदूषण के प्रभाव से पृथ्वी का कोई भी हिस्सा अछूता नहीं रह गया है। मनुष्य के विभिन्न क्रियाकलापों यथा शहरीकरण, औद्योगिकरण और आधुनिक कृषि पद्धतियों से संपूर्ण विश्व में जल संसाधनों वायु और भूमि आदि को बहुत बुरी तरह से प्रदूषित किया गया है। मनुष्य की एवं सुख–सुविधाओं एवं अति महत्वाकांक्षी विचारों के कारण न केवल प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, बल्कि अत्यंत विषाक्त रसायनों से भी प्राकृतिक तत्व प्रदूषित हो रहे हैं। ग्रीन हाउस गैसों के भारी उत्सर्जन से वातावरण में भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई है इन सब का दुष्परिणाम यह है कि वर्तमान समय में पौधों और जीवन की अनेक प्रजातियां या तो विलुप्त हो चुकी है या विलुप्त होने की कगार पर है। वर्तमान समय में संपूर्ण मानव जाति के समक्ष पीने योग्य पानी की उपलब्धता सांस लेने के लिए शुद्ध हवा और भूमि संरक्षण की समस्या विकराल रूप धारण करते जा रही है। ऐसा अनुमान है कि 2050 तक लवणीय मिट्टी में 50 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। अतः वर्तमान समय में स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र और संपूर्ण भूमंडल पर मानव जाति के गतिविधियों के प्रभाव को नियंत्रित कर पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान की आवश्यकता है।

मौर्यकालीन इतिहास के गहन अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि मौर्य कालीन समाज अर्थात् राजा और प्रजा दोनों को प्रकृति से अत्यंत लगाव था। उनको इस बात की जानकारी थी कि मनुष्य के अस्तित्व के लिए प्रकृति से सामंजस्य से बैठ कर ही सहचार्य रूप में चला जा सकता है और यही कारण है कि मौर्य कालीन शासको द्वारा प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन अनेक अनेक उपाय किए गए।[4] उदाहरणस्वरूप मौर्य साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के प्रांतीय शासक पुष्यगुप्त के द्वारा जल संरक्षण एवं सिंचाई की सुविधा के लिए सुदर्शन झील का निर्माण करवाया गया। मौर्य साम्राज्य के संरक्षण एवं महामंत्री चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र में विभिन्न करों के साथ–साथ वन कर का उल्लेख करना इस बात का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण है कि उस समय पर्यावरण एवं प्रकृति पर लोगों का कितना अधिक ध्यान था।

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रकृति के सभी तत्वों का संतुलन अति आवश्यक है। यदि पारिस्थितिकी तंत्र का किसी भी एक तत्व का विनाश हो जाए तो संपूर्ण मानव जाति का विनाश संभव है और यही कारण है कि विश्व के महान सम्राटों में से एक मौर्य सम्राट अशोक के द्वारा पर्यावरणीय संरक्षण एवं संवर्धन के लिए न केवल जीव हत्या पर प्रतिबंध लगाया गया अपितु उनके लिए अनेक विभिन्न प्रकार के वृक्षों का रोपण करवाया गया।[5] जगह–जगह पर अनेक जलाशयों का निर्माण करवाया गया वृक्षों की महत्ता को समझते हुए सड़क के किनारे बचे हुए जमीन पर भी वृक्षारोपण किया गया जिससे न केवल मानव जाति अपितु अन्य जीव–जंतुओं को भी जीवन के लिए आवश्यक भोजन के साथ–साथ आश्रय भी प्राप्त हुआ। जहां एक ओर चंद्रगुप्त मौर्य के द्वारा वन विभाग प्रमुख के साथ–साथ वनपाल, वनचरक जैसे विभिन्न पदों पर व्यक्ति नियुक्त किए गए[6] जिनका कार्य वन संरक्षण कर पर्यावरण के प्रति जनता की जागरूकता को बढ़ावा देना था। चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र के एक

सूत्र के अनुसार ''रक्षे पूर्व कृतनराज नवांश्चभी प्रवर्तन्य''[7] अर्थात् किसी भी राजा को पहले वनों का संरक्षण करना चाहिए फिर नए वनों को रोपित करना चाहिए। मौर्य काल में पांच प्रकार के अभय वन थे जिनमें किसी भी प्रकार के जीवन की हत्या या किसी भी पेड़ पौधे को नुकसान पहुंचाना वर्जित था। अशोक ने ही विश्व में पहली बार पक्षियों एवं जानवरों के इलाज के लिए अस्पताल बनवा जो पर्यावरण के संरक्षण का एक आदित्य उदाहरण है। अशोक के शिलालेख एवं स्तंभ लेख में भी यह संदेश दिया गया है कि किसी भी जीवित जीव को दूसरे जीव का भोजन न बनाया जाए।[8] इसके साथ ही यह भी उल्लेखित है कि किसी भी जीव को मारकर हवन ना किया जाए। अशोक के स्तंभों पर सिंह वृषभ, गज, अश्व जैसे पशुओं और कमल जैसे पुष्प के चित्र का अंकन यह दर्शाता है कि मौर्य काल प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन का अनूठा कल रहा होगा जिससे पर्यावरण का महत्व आम लोग भी समझ सके।[9] इस प्रकार हम देखते हैं कि मौर्य काल में पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आदित्य एवं अद्‌भुत प्रयास किए गए।

## निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का प्रयास मौर्य काल का एक सफल प्रयास था। सम्राट अशोक के प्रकृति प्रेम के कारण तथा जनता के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण को सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कई महत्व के साथ जोड़ा गया। मौर्य काल में आई प्राकृतिक आपदा जैसे समस्याओं का समाधान पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के माध्यम से ही संपन्न हुआ। इस प्रकार ऐतिहासिक अवलोकनों से यह स्पष्ट होता है कि मौर्य काल में राजा और प्रजा दोनों को पर्यावरण के महत्व से संबंधित उपयोगिता की स्पष्ट जानकारी थी जिसके फल स्वरुप राजा और प्रजा दोनों ने पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए यथाशक्ति प्रयास किया।

## संदर्भ सूची

1. थापर रोमिला, (1975) *भारत का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं 43।
2. शरण बाबू अवध बिहारी, (1916) *मेगास्थनीज का भारत विवरण,* नागरी प्रचारणी सभा, आरा बिहार, पृ. सं 12।
3. मुखर्जी राधा कुमुद, (1993) *चन्द्रगुप्त और उसका काल,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं 215।
4. शर्मा श्री राम, (1967) *विष्णु पुराण,* प्रथम खंड (अनुवादित), संस्कृत संस्थान, बरेली, पृ. सं 303।
5. चौधरी हेमचन्द्र राय, (1871) *प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास,* किताब महल, इलाहाबाद, पृ. सं 1।
6. *विष्णु पुराण,* पूर्वोक्त, पृ. सं 303।
7. पांथरी भगवती प्रसाद, (2003) *अशोक,* किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. सं 146।
8. थापर रोमिला, (2001) *अर्ली इंडिया,* पेंगविन बुक, लंदन, पृ. सं 200।
9. कोशाम्बी डी डी, (1973) *द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ ऐन्शन्ट इंडिया,* विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. सं 162।

********